षटलेश्या

हे भव्य आत्मन् ! हमारे अच्छे-बुरे परिणाम ही जीवन विकास और विनाश का कारण बनते हैं। व्यक्ति की इच्छाओं व तृष्णाओं की तीव्रता व मन्दता का सुन्दर परिचय कराने वाला यह चित्र है।

पहला व्यक्ति जो वृक्ष पर कुल्हाड़ा चला रहा है वह अत्यंत निकृष्ट कृष्णलेश्या रूप परिणाम वाला है जो आम खाने की इच्छा रखता हुआ पूरा वृक्ष ही काटने जा रहा है। शाखा को काटनेवाला दूसरा व्यक्ति नील लेश्या वाला है। छोटी-छोटी डालों को तोड़ने वाला तीसरा व्यक्ति कापोत लेश्या वाला है। आमों का गुच्छा तोड़ने वाला पद्म लेश्या वाला है तो अत्यंत संतोषी छटवाँ व्यक्ति शुक्ल लेश्या वाला है। इस प्रकार क्रमशः तीव्रतम, तीव्रतर, तीव्र, मंद, मंदतर और मंदतम कषायों, इच्छाओं और तृष्णाओं का अनुमान कर लिया जा सकता है। कषाय से सहित मनवचन काय की प्रवृत्ति लेश्या कहलाती है। यह परिणाम ही शुभ अशुभ आयु-बंध के कारण होते हैं।

Scanned by CamScanner